भजन

तर्ज– खुदा करे मोहब्बत मे

कभी तो इश्क में अपने भी वो असर आऐ

के बेखुदी में हमेशा पिया नजर आए

1 जमाने भर के गिले–शिकवे सुना ही ना करें

मर के दुनिया में तरफ हक की जीते ही रहे

दीवारों दर की हदों से हम यूं गुजर जाए

2 आह निकले भी अगर मुख से पिया पिया ही कहे

एक तन मन हो जुदा होकर एक पल ना रहे

इश्क की आखिरी मंजिल का हमसफर पाये

3 जब भी देखें तो पिया की ही वो नजर देखें

धाम वाहेदत में हम अपने ही वो फजर देखे

वक्त आखिर का दर्द लेकर कुछ संभल जाए

4 रात और दिन क्या है इक पल भी ना करार आए

एक होकर के ही रह जाए इतना प्यार आए

ये आशिकी का हंसी मंजर बस ठहर जाए।